डिसेक्शन में पेपर मेशे मॉडल का इस्तेमाल

हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने स्कूल-कॉलेजों में जंतुओं के डिसेक्शन पर रोक लगा दी है। इसके एवज में आयोग ने कंप्यूटर मॉडल्स वगैरह के उपयोग का सुझाव दिया है। मगर इतिहास में झांकें तो करीब 200 साल पहले फ्रांस में मानव शव विच्छेदन के लिए कागज़ की लुगदी से बने मॉडल्स का इस्तेमाल किया गया था। ऐसा एक मॉडल ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न संग्रहालय में मौजूद है।

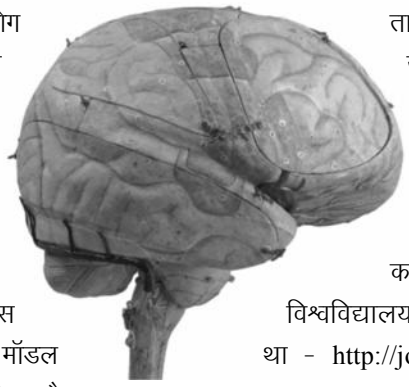

दरअसल, इस मॉडल का निर्माण 1840 के आसपास एक फ्रांसीसी चिकित्सक व शारीरिकी विशेषज्ञ लुई थॉमस जेरोम औज़ू ने किया था। औज़ू जब चिकित्सा के छात्र थे, तब उन्हें उस समय उपलब्ध घटिया डिसेक्शन मॉडल्स की वजह से काफी दिक्कतें हुई थीं और इस काम के लिए मृत मानव देह भी आसानी से नहीं मिल पाती थी। मोम के मॉडल्स जल्दी ही खराब हो जाते थे। लिहाज़ा उन्होंने कागज़ और लेई के साथ प्रयोग करना शुरू किया।

1822 में अपनी चिकित्सा शिक्षा पूरी करते-करते औज़ू ने ऐसा पहला शारीरिक मॉडल तैयार कर लिया था। इसे पेरिस एकेडमी ऑफ मेडिसिन ने एक महान सफलता निरूपित किया था। पांच साल बाद औज़ू ने ऐसे मॉडल्स का कारखाना डाल दिया था।

ये मॉडल्स कागज़ की लुगदी (पेपर मेशे) से बनाए गए थे। इनमें बारीक शिराएं बनाने के लिए तार पर लिनेन लपेटा गया था और मोटी धमनियां व शिराएं सन से बनाई गई थीं। विभिन्न अंग तो कागज़ की लुगदी से बने ही थे। पेपर मेशे के ऊपर प्लास्टर का एक अस्तर चढ़ाया गया है ताकि मॉडल मज़बूत बन सके। इसके ऊपर अंडे की ज़र्दी में रंगीन पदार्थ मिलाकर पेंटिंग की गई थी। यह मॉडल ऐसा था कि इसे चरण-दर-चरण खोलकर अध्ययन किया जा सकता था। इसे बनाने की तकनीक का विस्तृत विवरण वर्ष 2000 में क्यूबेक विश्वविद्यालय के रेजिस ओर्ली ने प्रकाशित किया था - http://journal.plastination.org/archive/jp_vol.15/jp_vol.15_30-35.pdf।

कई शारीरिकी विशेषज्ञों का कहना है कि इस मॉडल में अनुपात की दृष्टि से कुछ दिक्कतें हैं, मगर सारे अंग अपनी-अपनी सही जगह पर लगे हैं। सभी मानते हैं कि यह अपना शैक्षणिक उद्देश्य भलीभांति पूरा करता होगा। कम से कम यह उन लोगों के लिए तो बहुत उपयोगी होगा, जिन्होंने कभी मानव शरीर के अंदर झांका नहीं है।

फिलहाल दुनिया भर में ऐसे मात्र 100 मॉडल्स उपलब्ध हैं। इनमें से भी अधिकांश पुरुष शरीर के मॉडल्स हैं। स्त्री मॉडल्स कम होने का कारण यह माना जाता है कि शायद उस समय स्त्री शरीर को निर्वस्त्र अवस्था में प्रस्तुत करना उचित नहीं माना जाता होगा। कुछ लोगों का मत है कि उस समय शायद चिकित्सा विज्ञान की ज़्यादा रुचि भी स्त्रियों की शरीर रचना या शरीर क्रिया वगैरह में नहीं थी।

जैसे भी हो, मगर इतना तो कहना ही होगा कि यह एक ज़बर्दस्त काम था और आज इसे दोहराने की ज़रूरत भी है और शायद आज यह कहीं अधिक आसान भी होगा क्योंकि तमाम किस्म के अन्य उपयुक्त पदार्थ उपलब्ध हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता
व्यक्तिगत 150 रुपए
संस्थागत 300 रुपए

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें।

पता - ***ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016***